REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2022

फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों में आंचलिक तत्व

अल्पना मिश्रा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

फणीश्वर नाथ रेणु हिन्दी के अप्रतिम कथाकार है। रेणु जैसे रचनाकार की कृतियों का प्रतिनिधि चयन प्रस्तुत करना अगर नितान्त असंभव नही तो भी बड़ा जोखिम भरा कार्य है। क्योंकि ऐसा रचनाकार छोटे से छोट ब्यारों और मुहूर्तों को रूपायित करते हुए जनमानस पर अपना व्यापक प्रभाव छोड़ता है। फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1911 ई. को एक किसान परिवार में हुआ था। रेणु का जीवन किसी उपन्यास के नायक से कहीं अधिक आकर्षक, दर्दीला, घटना बहुत, रोमांचक तथा क्रांतिकारी था। पिछड़े गांव में रहकर भी रेणु के पिता शिलानाथ मंडल, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सजग तथा सक्रिय थे।

मुख्य शब्द – फणीश्वरनाथ रेणु, उपन्यास, आंचलिक तत्व एवं रचनाए ।

प्रस्तावना –

बचपन में रेणु को गांव के ही आसपास के स्कूलों में भेजा गया। फारबिसगंज और आररिया के स्कूलों में प्रायमरी और मिडल स्कूल की विधिवत शिक्षा इन्होंने ग्रहण की। नियमित रूप से अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करने की मनः स्थिति में रेणु बचपन से ही नहीं थे। गांव का खुला वातावरण उनके व्यक्तित्व में स्वतंत्रता का भाव भर रहा था। गांव और शहर के बीच रेणु का सम्पूर्ण जीवन घड़ी के पैण्डुलम की भांति दोलायमान रहा। व आजीवन गाँव की जहलता और गरीबी के तीव्र आलोचक तथा ग्रामीण संस्कृति समृद्धि के मुखर प्रशंसक बने रहे। रेणु के व्यक्तित्व में निर्माण में अपने गांव के नेपाल के कोईराला परिवार के अभिजात परिवार की महत्पूर्ण भूमिका थी। रेणु की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विश्व दृष्टि के निर्माण में उनके समाजावादी एवं साहित्यक मित्रों का भी हांथ था।

राजनीति और साहित्य दोनों की रेणु जी की गहरी रूचि के क्षेत्र थे। रेणु के साहित्यकार बनने का आरंभिक दौर रेखचित्र, रिपोर्ताज केवल नाम गिनाने भर को थे, इस विधा को रेणु जी ने कलात्मक ऊँचाईयाँ दी और सम्मानजनक स्थान पर पहुँचाया। 'आँचलिकता' का तत्व हिंदी साहित्य में रेणु का अन्यतम योगदान है यद्यपि इसको लेकर रेणु को कड़ी आलोचना, व्यंगबाण और आक्षेप झेलने पड़े। सर्वप्रथम तो औचलिकता को गलत प्ररिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिशे हुई और राजनीतिक रूप से संकीर्ण क्षेत्रवाद से जोड़ा गया, साथ ही इसे राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता के विलोम में भी देखा गया। रेणु के अंचल भौगोलिक सांस्कृतिक दृष्टि से लघु होते हुये भी अपनी गहनता में राष्ट्रीय और वैश्विक व्यापकता का निर्माण करने में सक्षम हैं। रेणु की कथाओं में न गावं आधा है न जनजीवन दोनों ही सम्पूर्णता मे चित्रित होते हैं। केद्र और परिधि के साथ यह गांव स्थिर और जड़ नहीं निरंतर परिवर्तित हो रहा है। मूर्खता, लाचारी, लोभ, काईयापन, सरस्ता और दिव्य ओलाप – इस

सबके साथ चलता हुआ और बदलता हुआ गांव रेणु की कथा लेखन में उपस्थित है। रेणु इतने आत्मीय हैं कि वे अपने आत्मीय आलंगन में केवल आम आदमी को ही नहीं अपितु उसके पूरे परिवेश को समेट लेते हैं।

विश्लेषण –

आजादी के बाद गांव जिस तेजी से बदल रहें टूट रहें कस्बे और शहर की बुराइयों की लत पकड़ते जा रहें हैं। उसे रेणू ने बहुत पैने पन से चित्रित किया हैं। व्यक्ति परिवार और गांव के आपसी रिश्ते में तनाव और टूटने की प्रक्रिया में साक्षी रेणु की अनेक कहानियां हैं। गांव के लोग गांव छोड़कर भाग रहे हैं और शहर उन्हें क्रूरता पूर्वक तोड़ता है। सभ्यता के वर्तमान विकृति चेहरे का तत्व विवरण देते हुए अपने अगिनखोर संकलन की कहानियों में रेणू जीवन और समाज के बचे हुए स्वास्थ्य की जिग्र करते हैं और उनकी संजीदगी हमें कहीं गहेर लेती है।

1954 में 'मैला आंचल' उपन्यास प्रकाशित होते ही रेणू की प्रसिद्धि में अचानक अपार वृद्धि हुई जो अकारण नहीं थी। इस उपन्यास के माध्यम से हिंदी कथा साहित्य में आंचलिकता की अवधारण ही नहीं अपितु आंचलिकता के एक समर्थ्य आंदोलन का भी एक सूत्रपात हुआ। 'मैला आंचल' की मुक्तसर सी भूमिका के द्वारा उन्होनें हिंदी साहित्य को आंचलिक उपन्यास जैसा परिभाषिक शब्द दिया। इसके पश्चात में उन्होनें 1957 में 'परिती परिकथा' नामक एक बड़े फलक वाला उपन्यास लिखा जिसकी बहुत से साहित्यकारों ने मक्त कंठ से सराहना की वहीं नलिन विलोचन शर्मा और श्रीपति राय ने तीखी आलोचना की। रेणू की आंचलिकता अपने कथा क्षेत्र को उसकी परिस्थिति और संस्कृति की समग्रता में पूरी संवेदनशीलता के साथ अंकित करते हैं। आंचलिकता रेणू का स्वभाव है। यह संकीर्ण क्षेत्रवादिता का प्रशय देनी वाली प्रवृति नहीं है। रेणू के पश्चात हिंदी के साथ–साथ पूरे भारतीय साहित्य में (नेपाली में भी) आंचलिकता के आंदोलन का सूत्रपात हुआ। रेणू ठोस जीवन के अनुभवों से समृद्ध थे इसीलिए जीवन के सम्पूर्णता में देखने का प्रयास भी करते थे। एक रचनाकार और राजनीतिक प्राणी दोनों ही रूपों में रेणू जैसे रचनाकार ने गांवों में ही किया था वे गांवो के दर्द, बेचैनी और संघर्ष के साक्षी रहे हैं।

ग्रामीण इलाकों के नृत्य गीतों के बीच रेणु का जीवन व्यतीत हुआ था। यही कारण है कि उनके आंचलिक उपन्यासों में अंचल की भाषा, लोकगीत आदि का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। रेणु के साहित्यकार बनने का आरंभिक दौर रेखाचित्र रिपोर्ताज और कहानियां आदि लिखने से प्रारम्भ हुआ। रेणु ने उपन्यास विद्या को एक नवीन कलात्मक उंचाई प्रदान की। फणीश्वर नाथ रेणू का नाम आंचलिक उपन्यासकारों में सबसे ऊपर लिखा जाता है। हम फणीश्वरनाथ रेणू जी के उपन्यास 'मैला आंचल' में निहित आंचलिक तत्व परिती परिकथा उपन्यास में निहित आंचलिक तत्व तथा अन्य उपन्यास तथा कहानियों निहित आंचलिक तत्वों का अध्ययन अग्रलिखित तत्वों करेगें।

आंचलिक पृष्ठभूमि :

आंचलिक उपन्यास के लिये अंचल विशेष की सीमा, उसकी यर्थातता और आंचलिक धरातल अत्यंत आवश्यक होता हैं। क्योंकि उपन्यास में आंचलिक पृष्ठभूमि आंचलिकता से ओतप्रोत होता है। फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास मैला आंचल में आंचलिक पृष्ठभूमि पूरी भावभंगिमा में पूर्णिया जनपद की विभिन्न जीवन पद्धति घटनाओं का यथार्थ उद्घाटन करता है। अंचल की धरती पेड़–पौधें, पश–पक्षी, नदी–नाले, खेत–'मैदान, पोखर–तालाब, पर्व, त्योहार, विश्वास आदि इस उपन्यास की आंचलिक पृष्ठभूमि को अत्यंत सजीव सा बना देता है। यथा उदाहरण दृष्टव्य है–

'गांव' में यह खबर तुरंत बिजली की तरह फैल गई– मलेट्री ने बहरा चेथणु को गिरफ्तार कर लिया और लोविन लाल के कुंए से बाल्टी खोलकर ले गये। यद्यपि 1942 के जन आंदोलन के समय इस गांव में न तो फौजियों को कोई उत्पात हुआ और न ही आंदोलन की लहर इस गांव तक पहुंच पाई थी। किंतु जिले भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहां तक जरूर पहुंची थी। मोगलीटीशन पर गोरा सिपाही एक धोबी की बेटी को उठा ले गया इसी को लेकर सिक्ख और गोरे सिपाहियों में लड़ाई हो गयी और गोली चल गयी। ढोल बाजा में पूरे गांव को घेरकर आग लगा दी गई एक भी बच्चा बचकर नहीं निकल सका। मुसुहरू के ससुर ने अपनी आंखों से देखा था – ठीक आग से भुनी हुई मछलियों की तरह लोगों की लाशे महिनों पड़ी रही

कौआ भी न खा सकता था, मलेट्री का पहरा था। मुसहरू के ससुर का भतीजा फारविश्स साहब का खानसामा है, वह झूठ बोलेगा? पूरे चार साल बाद अब इस गांव की बारी आई है। दुहाई मां कालीदुहाई और बाबा लरसिंह। बतावरा और प्रकृति आंचलिक उपन्यासों का साक्ष्य है। इन उपन्यासों के वातावरण का प्राधान्य होता है, वातावरण की उच्च पृष्ठभूमि के कारण आंचलिक उपन्यास यर्थाथ धरातल को पाठक के समक्ष उपस्थित कर पाते हैं। मैला आंचल उपन्यास में अंचल का वातावरण अपनी समग्र विविधता और आंचलिक हाव भाव का प्रस्तुतिकरण करते हुए उपस्थित हुआ है। वातावरण की अपूर्व छटा पाठक के मन को आकर्षित करती है। हां ठीक सूरज डूबन के समय? करसामा है। डायन का करसामा है। समझे हीरू। शुक्रवार की अमावस्या है। जिसपर तुमको संदेह हो उसके पिछवाड़े में बैठे रहना। ठीक दो पहर रात को वह निकलेगी उसका पीछा करना वह तुम्हारे बच्चे को जिला कर, तेल फुलेल लगा कर गोद में लेकर जब नाचने लगी तब .....। उससे समय यदि उससे बच्चा छीन लो तो फिर उस बच्चे को कोई नहीं मार सकता .....। इंद्र का वज्र भी फूल हो जायेगा।

आंचलिक भाषा :

फणीश्वर नाथ रेणु जी ने अपने उपन्यासों में आंचलिक भाषा का प्रयोग संवाद, विधान तथा वस्तुवर्णन दोनों में ही यथार्थ ढंग से किया है। परतीपरिकथा उपन्यास के संवाद छोटे बड़े सभी प्रकार के संवाद हैं जिनमें आंचलिक भाषा का रंग लेकर रेणु जी ने आंचलिक पात्रों चरित्र एचं आंचलिक वातावरण की श्रीवृद्धि की है। आंचलिक भाषा के शब्द प्रयोग में कहीं ध्वनि चित्र उपस्थित होता है तो कहीं शब्द चित्र। लोकगीतों में तों आंचलिक भाषा प्रबल रूप से अपनी सारभंगित ग्रहण किये हुए उपस्थित हुई है। इस प्रकार आंचलिक भाषा मे छविमय प्रस्तुत के कारण उपन्यास आंचलिक तत्वों से ओतप्रोत है। आंचलिक लोकभाषा में गाया जाने वाले लोकगीत इस उपन्यास में एक सुंदर छटा बिखेरता है। उदाहरण दृष्टव्य है–

'' अरहे लोटवा जो जाल करि मोहर भंजउल हो सिवेंदर मिसिर!
पड़र मेमनिया के फेर हो सिवेंदर मिसिर!?
गोरकी मेमनियां जे बड़ी रे जोगनियां हो सिंवेंदर मिसिर!
हंसी–हंसी लेलक सब टेर हो सिवेंदर मिसिर!

अन्य उपन्यासों एवं कहानियों में आंचलिकता :

फणीश्वरनाथ रेणु का आंचलिक उपन्यास दीर्घतया 1963 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में रेणु ने बांकीपुर के वर्किंग वीमेन्स होस्टल में रहने वाली लड़कियों का चित्रण किया है। इस उपन्यास की कथा में बेला जैसी अनाचार और भ्रष्टाचार से समाज को मुक्त करने वाली नारियों का जीवन चरित्र अंकित किया गया है। 'दीर्घतया रेणु जी के द्वारा रचित एक लघु उपन्यास है। यह उपन्यास पूंजीवादी समाज में नी शोषण की समस्या कोक यथार्थता के साथ उजागर करने वाला है। इसमें आंचलिक वातावरा की झलक भी देखने को मिलतली है। उदाहरण प्रस्तुत है–

''.....नहीं जानवर कोई आदमी ही फाटक पीट रहा है। गली की स्वान मण्डली ने एक स्वर से इस हरकत का विरोध किया। .....बूढ़ी मुनियां दाई ने फाटक खोलकर पूंछा – क है, ऐत्ती बेर! मुनियां ने बड़ी मेमसाहब के ड्राइबर का चेहरा देखा और चिहुंक पड़ी–एं? इसके बाद बड़ी मेमसाहब को देख उसकी धुकधुकी तेज हो गई कलेज की .....कलेजा धुकधुका देने वाली बात है। बड़ी मेमसाहब ने मुनियां का सलाम नहीं कबूल किया। .....क्यों री, बुढ़ढी क्या समझ लिया है? हराम का पैसा खाती है और शाम को ही सो जाती है? ठहरों सबको एक–एक कर खलास करवाती हूँ तुम्हारी बेटी कहां है? चलो बेला, मिस साहब को जगाओ .....बूढ़ी मुनिया अंधेरे में दौड़कर चलने लगी और किसी चीज से टकराकर गिरी।''

ठस उपन्यास में बांकीपुर गांव की समाजसेवी संस्था में कार्य करने वाली महिलाओं के जीवन को उजागर किया गया है। उदाहरणार्थ है– ''बांकीपुर की समाज सेवी संस्थाओं में विमेंस वेलफेयर बोर्ड की बड़ी प्रतिष्ठा है। स्थानीय पत्रों में इसक कार्यक्रम और गतिविधियों के सचित्र संवाद छपते हैं। .....आज यदि रमला मौसी होती तो बेला अभी दौड़ी जाती किचनर रोड सीधे। सब कुछ सुनकर मौसी कहती– इस तरह टूट जाने

वाल लड़कियों को समाज सेवा का कोई व्रत नही लेना चाहिए। तुम यह क्यों भूल जाती हो कि हो कि, तुम लड़ाई के मैदान में हो, लड़ना है, कष्ट भोगना ही नहीं, मर जाना है यहीं! बेला भोग रही है कष्ट लेकिन रमला मौसी के बिना कष्ट को झेलने की क्षमता बेला में नहीं .....मौसी! तुम थीं, सारे आघातों और आक्रमणों को अपनी देह पर ओढ़ लेती थी – बेला गुप्त के मन में बसी रमला मौसी .....मौसी रखो अपना यह सर्वदर्द हर ग्रंथ ..... गले में कंठी, ललाट पर टीका! सिस्टर निवेदिता की मूर्ति बेला गुप्ता की सजल आंखों में उतर आती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में आंचलिकता के तत्व परिलक्षित होते हैं। डाल्टेगंज, पटना, भागलपुर, सहर्षा आदि जिलों में बसे गांवो का उल्लेख किया गया है उदाहरणा – तारावती देवी अपना घर डाल्टेनगंज के पास बतलाती हैं। सधवा हैं। पती ने दूसरी शादी कर ली हैं। तारावती देवी को दो अक्षर का ज्ञान था, इसीलिए ट्रेनिंग में आई है। ..... शिवकुमारी पटना की लड़की हैं। चचा बिहार शरीफ रजिस्ट्री आफिस में मुहरिर हैं। शिवकुमारी मिडिल पास करके गांव की पाठशाला में पढ़ाती थी। .....श्यामा भागलपुर जिले के मंडार पर्वत के तलहटी के किसी गांव की बेटी हैं। नॉटी ठिगनी किंतु सुश्री! किंतु ..... हाथ के रोंयें लम्बे हैं काले–काले! ..... गौरी सहरसा जिले के किसी कछार पर रहने वाली लड़की है। गांव के चरखा सेंटर में अम्बर की ट्रेनिंग ले चुकी है। रानी पट्टी आश्रम के महिला विभाग में रही है। .....कमरे में झाड़ू देते समय और कपड़ा धोते समय कौन गीत गाती है। गौरी देवी करूण राग में? .....जंतसार। चक्की पर गाती है – गांव की औरते! जानकी देवी के उत्साहित करते।

निष्कर्ष –

रेणु की जड़े दूर गांव तक बैठी हुई थी। भारतीय गांव और छोटे बड़ें बसवानुमा गांव उनके मन पटल पर अंकित थे। रेणु जी को इन सुदूर अंचलों, जंगलों, पहाड़ों, नदियों, पोखरों के बीच बसे गांवो से बेहद लगाव था। गांव की जिंदगी के बहुत सारे तत्व उन्होंने अपने आंखों से देखे थे। यही कारण हैं कि रेणु जी को गांवो से गहरी आत्मलीनता थी। ग्रमीण जीवन से जुड़ी अनेक मिथकीय कथाएं अंधविश्वास, पौराणिक देवी देवता, ग्रम देवता, पर्व–त्योहार, नित्य गीत, लोककथाएं अनुश्रुतियां आदि के एक पूरे संसार का अनुभव रेणु जी ने बचपन में ही किया था। मैला आंचल उपन्यास में तीसरी दुनिया का एक कथानक छुपा हुआ है। इस उपन्यास के साथ हिंदी उपन्यास परंपरा में एक नए प्रकार का कथाशिल्प विकसित हुआ है। कथा में किसी केंद्रिय पात्र को महत्व न देकर रचनाकार रेणु जी ने पूरे कथा आंचल को महत्व दिया है। इस प्रकार पूर अंचल रचनात्मक व्यक्तित्व प्राप्त करता है। कोई भी भूअंचल केवल मनुष्यों से ही नहीं बनता अपितु उसमें ऊसर–बंजर जमीन, हरे–भरे खेत, जंगल, बाग–बगीचे, नदी–नाले, ताल–'पोखर, टीले–खंडहर, पशु–पक्षी आदि आंचलिकता के वातावरण की सृष्टि करते हैं। परितीपरिकथा उपन्यास गांव के अनेंकों इतिहास की कथा को लेकर लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में आंचलिकता के विलक्षण और लक्षण दिखाई पड़ते हैं। इन प्रमुख उपन्यासों के अतिरिक्त रेणु जी के 'दीर्घतया' जुलूस एवं पलटू बाबा उपन्यास में आंचलिकता की अटूट क्षटा देखने को मिलती है। फणीश्वर नाथ रेणु जी की अनेक कहानियों जैसे तीसरी कसम, तीन बिंदिया, पंचलाइट, समदिया, लालपन की बेगम, रसप्रिया, आदि कहानियों में आंचलिक तत्व निहित हैं।

संदर्भ –

1. फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आंचल, पृष्ठ 369
2. फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आंचल, पृष्ठ 308
3. फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आंचल, पृष्ठ 221
4. फणीश्वर नाथ रेणु, तीसरी कसम, पृष्ठ 124
5. फणीश्वर नाथ रेणु, परती परिकथा, पृष्ठ 229